अनुमोदित
2018-19

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय – समाजकार्य (एम.एस.डब्ल्यू.)

संकाय – कला

(नियम, परीक्षा योजना, अंक योजना एवं पाठ्यक्रम)

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय – समाज कार्य (एम.एस.डब्ल्यू)

प्रथम सेमेस्टर

प्रथम प्रश्न पत्र – समाज कार्य की भारतीय परंपरा

अधिकतम अंक – 100 | 5 क्रेडिट | उत्तीर्णांक – 40
(आंतरिक मूल्यांकन – 30)
(बाह्य मूल्यांकन – 70)

आवश्यकता : समाजकार्य के विद्यार्थियों को यही बताया जाता है कि समाजकार्य की अवधारणा पाश्चात्य है और उसका भारतीय परंपरा से कोई संबंध नहीं है, इसलिए इस प्रश्न–पत्र के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय परंपरा से परिचित हो सकेंगे।

उद्देश्य :

1. समाजकार्य की पाश्चात्येत्तर परंपरा से विद्यार्थी को परिचित कराना।
2. समाजकार्य में शासकीय तन्त्र के अतिरिक्त समाज की क्या भूमिका रही है, से परिचित कराना।
3. भारत में आदिकाल से समाज और उससे संबंधित कार्यों का संपादन समाज के ही स्तर पर किया जाता है इस अवधारणा को विद्यार्थियों के जीवन में उतारना।
4. समाजकार्य की भारतीय परंपरा को निगमीय और समाज के स्तर पर सुदृढ करना।

इकाई प्रथम : वैदिक साहित्य में समाज कार्य, समाजकार्य का स्वरूप, गण समाज, आश्रम व्यवस्था, ऋण, पुरूषार्थ, पुनर्जन्म, सभा, समिति, धर्म, शिक्षा

इकाई द्वितीय : वैदिकेत्तर साहित्य में समाजकार्य, वर्णव्यवस्था, जाति, आश्रम व्यवस्था, ऋण, पुरूषार्थ, संस्कार, संचितकर्म तथा पुनर्जन्म की अवधारणा, धर्म एवं शिक्षा

इकाई तृतीय : संस्कृत महाकाव्यों में समाजकार्य अश्वमेघ यज्ञ, राजसूय यज्ञ, वाजपेयी यज्ञ, उत्सव, श्रेणीयाँ

इकाई चतुर्थ : मध्यकालीन (भक्तिकाल) भारतीय साहित्य में समाजकार्य

- विदेशी आक्रमण और आक्रांताओं का प्रभाव
- नगर एवं ग्रामीण परिवेश के अनुसार समाजकार्य

A. Dixit

इकाई पंचम : ब्रिटिश शासनकाल में समाजकार्य एवं समाजकार्य का निगमीकरण

- 1687 – मद्रास नगर निगम की स्थापना
- 1757 – प्लासी युद्ध ब्रिटिश सत्ता का सुदृढ़ीकरण
- भारतीय परंपराओ का क्षरण एवं ब्रिटिश काल के समाज कल्याणकारी राज्य का अभ्युदय
- 1773–1947 के मध्य निर्मित अधिनियम एक विहंगावलोकन

महत्व : इस प्रश्न–पत्र के माध्यम से विद्यार्थी समाजकार्य की भारतीय परंपरा से परिचित हों पायेंगे तथा वह समझ सकने में समर्थ हो सकेंगे। कि भारत में आदि काल से ही किस प्रकार से समाजकार्य को संपादित किया जाता था और ब्रिटिश सत्ता ने ब्रिटिश पद्धति के आधार पर उस व्यवस्था का किस प्रकार से क्षरण किया।

संदर्भ पुस्तकें :–

1. आज का भारत – रजनीपाम दत्त
2. साध मा का समाज – अनुपम मिश्र
3. आज भी खरे हैं तालाब – अनुपम मिश्र
4. राजस्थान के रजत बिद्र – अनुपम मिश्र
5. भारत में स्थानीय स्वशासन – एस.आर. माहेश्वरी
6. वैदिक साहित्य में समाज व्यवस्था – चौखम्बा
7. इण्यिन सोशल सिस्टम – राम आहुजा
8. प्राचीन भारतीय, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थाएं – पुरी दत
9. भारत की संत परंपरा एवं सामाजिक समरसत्ता – कृष्ण गोपाल
10. भारत के जनपदीय संत – कृष्ण गोपाल

P.Dixit

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय – समाज कार्य (एम.एस.डब्ल्यू)

प्रथम सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्न पत्र – समाज कार्य व्यवसाय का परिचय–प्रथम

अधिकतम अंक – 100 5 क्रेडिट उत्तीर्णांक – 40
(आंतरिक मूल्यांकन – 30)
(बाह्य मूल्यांकन – 70)

आवश्यकता : विगत दो सौ वर्षों से भारत पर ब्रिटिश सत्ता का आधिपत्य रहा हैं और वर्तमान में भी उसी की छाया सत्ता प्रतिष्ठान पर परिलक्षित होती है। इसलिये भारत में समाजकार्य की प्रकृति भी व्यवसायिक प्रकार की हो चुकी है, इसलिये विद्यार्थी को इसके अध्ययन की आवश्कता महसूस होती है।

उद्देश्य :

1. विद्यार्थी को आधुनिक समय में समाजकार्य की उत्पति व विकास से परिचित कराना।
2. समाजकार्य का सार्वजनिक व निजी उपक्रमों में क्या महत्व है, उससे परिचय करवाना।
3. समाजकार्य के व्यावसायिक स्वरूप से विद्यार्थी को परिचित कराना।

इकाई प्रथम : समाज कार्य का ऐतिहासिक विकासः–

1. समाजिक परिवर्तन का भारतीय इतिहास एवं वैचारिकी–प्राचीन काल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल।
2. भारत में समाज कार्य का विकास।
3. भारतीय समाज पर प्रभाव।

इकाई द्वितीय : समाज कार्य व्यवसाय के रूप मेंः–

1. समाज कार्य की परिभाषा, सिद्धांत,
2. आधार, उद्देश्य, कार्य, भूमिका, उपागम तथा प्रक्रिया।
3. व्यवसाय की विशेषताएं तथा समाजकार्य का व्यवसायीकरण।

इकाई तृतीय : समाज कल्याण प्रशासनः–

1. समाज कल्याण प्रशासन– अवधारणा, आवश्यकता, उद्देश्य,
2. सिद्धांत एवं प्रकार्य।
3. भारत में समाज कल्याण प्रशासन– जिला, राज्य एवं केन्द्र स्तरीय।

इकाई चतुर्थ : सामाजिक विधान के विभिन्न अभिकरण :–

1. भारत में सामाजिक विधान की अवधारणा, क्षेत्र एवं आवश्यकता।
2. कानूनी सहायता, जनहित याचिका तथा लोक अदालत/सामाजिक विधान में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका।
3. मानव अधिकार एवं समकालीन समाज में इनकी भूमिका, गुण एवं दोष।

A.B.xit

इकाई पंचम : सामाजिक नीतियाँ एवं नियोजनः–

1. सामाजिक नीति की अवधारणा, उद्देश्य, आयाम।
2. कल्याणकारी राज्य, अवधारणा एवं विशेषताऐं।
3. भारत में विभिन्न क्षेत्रीय नीतियाँ एवं उनका महत्व।

महत्व : इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी समाजकार्य के व्यवसायिक स्वरूप के महत्व को समझने में सफल हो सकेगें एवं व्यावसायिक रूप से स्वयंसेवी संगठनों के लिये योग्य हो सकेंगे।

संदर्भ पुस्तकें :–

1. द्विवेदी, राकेशः समाजकार्य व्यवसाय, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।
2. तिलारा, कुंवर सिंहः समाजकार्य सिंद्धात और व्यवहार, प्रकाशन केंद्र लखनऊ।
3. सिंह, सुरेंद्रः समाजकार्य, इतिहास दर्शन और प्रणालियाँ, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।
4. सिंह, ए.एन, सिंह, ए.पी : समाजकार्य, रैपिड बुक सर्विस लखनऊ।
5. कटारिया, सुरेंद्रः समाज कल्याण प्रशासन, रावत प्रकाशन, जयपुर।
6. सूदन, कृपाल सिंहः समाजकार्य अभ्यास एवं सिद्धांत, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।
7. सिंह, सुरेंद्रः भारत में समाजकार्य का क्षेत्र, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।

P.Dixit

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय – समाज कार्य (एम.एस.डब्ल्यू)

प्रथम सेमेस्टर

तृतीय प्रश्न पत्र – मानव, समाज एवं मानव व्यवहार की गत्यात्मकता–प्रथम

अधिकतम अंक – 100 | 5 क्रेडिट | उत्तीर्णांक – 40

(आंतरिक मूल्यांकन – 30)

(बाह्य मूल्यांकन – 70)

आवश्यकता : परिवर्तन प्रकृति का स्वाभाव है, उसी के अनुरूप मानव का स्वभाव भी परिवर्तित होता रहता है इसलिये इस प्रश्नपत्र के माध्यम से मानव समाज और उसकी गत्यात्मकता को समझने की आवश्यकता है।

उद्देश्य

1. इस प्रश्नपत्र के माध्यम से समाज की उत्पत्ति को समझना।
2. समय – समय पर समाज में जो परिवर्तन होते रहे है, उन्हें समझना।
3. समाज में प्रचलित परंपरागत और आधुनिक विचारों में समन्वय स्थापित करना।

इकाई प्रथम : सामाजिक समूह एवं संस्थाएं

1. सामाजिक समूह–अर्थ एवं प्रकार।
2. संस्थाएँ– अर्थ एवं प्रकार।
3. सामाजिक समूह का मानव व्यवहार पर प्रभाव।

इकाई द्वितीय :भारतीय समाज

1. भारत में सामाजिक स्तरीकरण, जाति एवं वर्ग का अर्थ एवं भविष्य।
2. भारत में सामाजिक आंदोलन समाज सुधार आंदोलन, कृषक आंदोलन, श्रमिक आंदोलन।
3. समाजिक आंदोलनों का समाज पर प्रभाव।

इकाई तृतीय : समाजशास्त्र :–

1. समाज का अर्थ एवं परिभाषा।
2. समाज कार्य का अन्य समाज विज्ञानों से संबंध।
3. ग्रामीण एवं नगरीय समाज–परिचय ।

इकाई चतुर्थ : मानव व्यवहार :–

1. मानव व्यवहार के निर्धारक तत्व अनुवांशिकी पर्यावरण एवं समाजीकरण।
2. मानव विकास के सिद्धांत, फ्रायड का मनोलैंगिक सिद्धांत, इरिक्सन का मनोवैज्ञानिक सिद्धांत, जीन प्याजे का व्यक्तित्व विकास का सिद्धांत ।
3. अभिवृत्ति – प्रकृति, प्रकार एवं अभिवृत्ति निर्माण।

P. Dixit

इकाई पंचम : विसंगत व्यवहार

1. अपराध की अवधारणा,
2. अपराध के प्रकार एवं कारण।
3. महिलाओं के प्रति अपराध।

महत्व : इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी समाज की आदि अवस्था से वर्तमान अवस्था को समझने में सफल हो सकेगा।

संदर्भ पुस्तकें :–

1. द्विवेदी, राकेशः समाजकार्य व्यवसाय, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।
2. तिलारा, कुंवर सिंहः समाजकार्य सिंद्धात और व्यवहार, प्रकाशन केंद्र लखनऊ।
3. सिंह, सुरेंद्रः समाजकार्य, इतिहास दर्शन और प्रणालियाँ, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।
4. सिंह, ए.एन, सिंह, ए.पी : समाजकार्य, रैपिड बुक सर्विस लखनऊ।
5. कटारिया, सुरेंद्रः समाज कल्याण प्रशासन, रावत प्रकाशन, जयपुर।
6. सूदन, कृपाल सिंहः समाजकार्य अभ्यास एवं सिद्धांत, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।
7. सिंह, सुरेंद्रः भारत में समाजकार्य का क्षेत्र, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।

P. Dixit

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय – समाज कार्य (एम.एस.डब्ल्यू)

प्रथम सेमेस्टर

चतुर्थ प्रश्न पत्र – समाज कार्य की शोध पद्धति एवं क्षेत्र–प्रथम

अधिकतम अंक – 100 | 5 क्रेडिट | उत्तीर्णांक – 40
(आंतरिक मूल्यांकन – 30)
(बाह्य मूल्यांकन – 70)

आवश्यकता : समाजकार्य एक अनुशासन के रूप में नव विकसित विद्या है। इस विद्या का क्षेत्र ओर पद्धति को समझने की महती आवश्यकता है।

उद्देश्य :

1. समाजकार्य शोध की पद्धति को समझना।
2. समाजकार्य के क्षेत्रो को समझना।
3. समाजकार्य का अन्य अनुशासनों के साथ अन्तः संबंध है, को समझना।

इकाई प्रथम : समाजकार्य की शोध पद्धति :–

1. समाज कार्य शोध की अवधारणा ।
2. शोध के प्रकार ।
3. शोध का महत्व।

इकाई द्वितीय : व्यक्तिगत समाजकार्य :–

1. व्यक्तिगत समाजकार्य – प्रकृति, परिभाषाएँ, उद्देश्य, सिद्धांत
2. व्यक्तिगत समाजकार्य की प्रवधियाँ : साक्षात्कार, गृह भेंट, अवलोकन, श्रवण
3. व्यक्तिगत समाज कार्य का अनुप्रयोग : इतिहास लेखन, साक्षात्कार लेना, रिकार्डिंग ।

इकाई तृतीय : **एनजीओ (गैर सरकारी संगठन)**

1. परिभाषा, सवैधांनिक स्थिति।
2. राष्ट्रीय स्वैच्छिक संगठन नीति 2007।
3. स्वैच्छिक संगठन एवं सामाजिक विकास।

इकाई चतुर्थ : सामाज कल्याण

1. समाज कल्याण की अवधारणा एवं इतिहास।
2. समाज कल्याण का वर्तमान परिपेक्ष में महत्व।
3. समाज कल्याण – चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ।

इकाई पंचम : समाज कार्य के क्षेत्र–

1. बाल कल्याण।
2. महिला कल्याण।

P.Dixit

3. परिवार कल्याण।
4. श्रम कल्याण।
5. वृद्ध कल्याण।

महत्व : इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी स. का. से गहन रूप से परिचित हो सकेगा एवं समाज में कार्यरत सामाजिक संगठनो के कार्यो को तथा उनके क्षेत्र से अवगत हो सकेंगे।

संदर्भ पुस्तकें :–

1. द्विवेदी, राकेशः समाजकार्य व्यवसाय, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।
2. तिलारा, कुंवर सिंहः समाजकार्य सिंद्धात और व्यवहार, प्रकाशन केंद्र लखनऊ।
3. सिंह, सुरेंद्रः समाजकार्य, इतिहास दर्शन और प्रणालियाँ, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।
4. सिंह, ए.एन, सिंह, ए.पी : समाजकार्य, रैपिड बुक सर्विस लखनऊ।
5. कटारिया, सुरेंद्रः समाज कल्याण प्रशासन, रावत प्रकाशन, जयपुर।
6. सूदन, कृपाल सिंहः समाजकार्य अभ्यास एवं सिद्धांत, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।
7. सिंह, सुरेंद्रः भारत में समाजकार्य का क्षेत्र, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।

P. Dixit